2017-18 2017-2018

ISSN-2320-4494
RNI No.MAHAUL03008/13/2012-TC
UGC Approved

POWER OF KNOWLEDGE

An International Multilingual Quarterly Refereed Research Journal

VOLUME-I
ISSUE-XX
Oct-Dec.2017

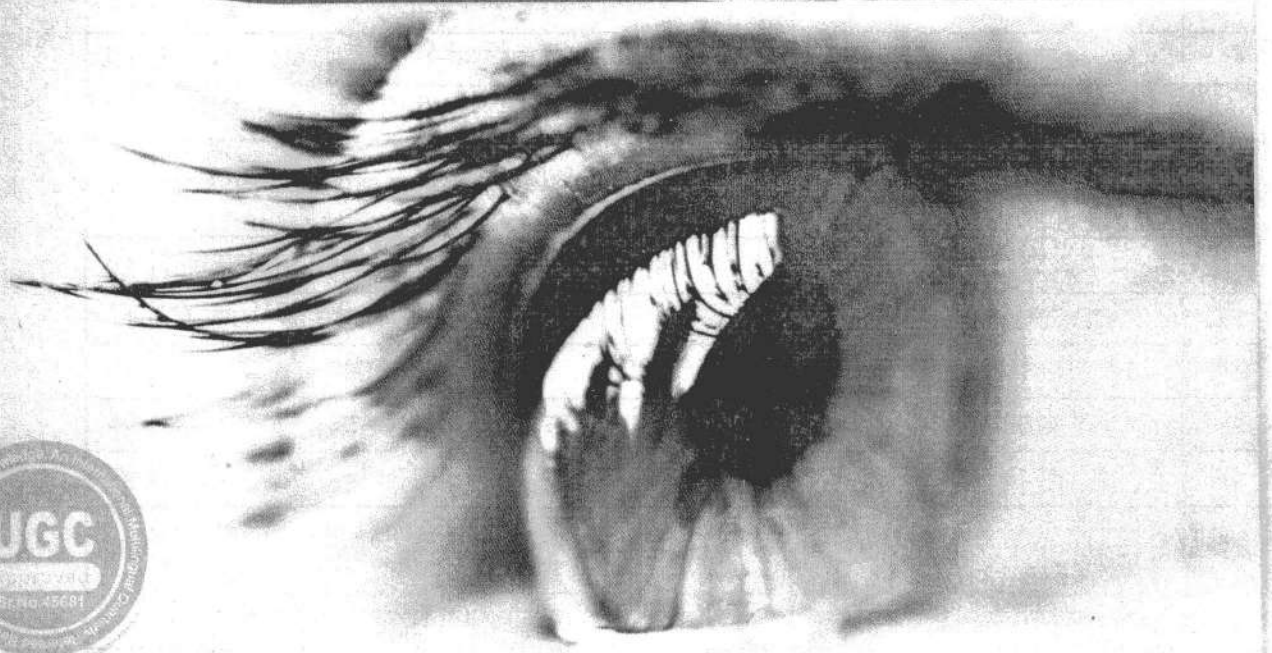

ARTS | COMMERCE
SCIENCE | AGRICULTURE
EDUCATION | MANAGEMENT
MEDICAL | ENGINEERING & IT I LAW
PHARMACY | PHYSICAL EDUCATION
SOCIAL SCIENCE | JOURNALISM

Editor
Dr. Sadashiv H. Sarkate

E-mail : powerofknowledge3@gmail.com
www.powerofknowledge.co.in

पृष्ठ क्रं.			
२२	बीड जिल्हयातील डाळींब फलोत्पादन शेतीचा भौगोलिक अभ्यास	प्रा. श्रीमती एम.एस. टेकाडे प्रा. डॉ. मधुकर गणपतराव राजपांगे	८५
२३	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर आणि संसदीय लोकशाही	प्रा. डॉ. नरवाडे भाऊराव माधवराव	८९
२४	मराठी निर्मितीचा पुनर्विचार : एक अभ्यास	प्रा. डॉ. सदाशिव सरकटे	९२
२५	अहमदनगरच्या इतिहासात ज्ञानोदय नियतकालिकाचे योगदान	सुरेखा दिनेश गांगुर्डे	९६
२६	महाराष्ट्र राज्याच्या भांडवली खर्चाच्या प्रवृत्तीचे विश्लेषण	डॉ. संजय तळतकर	९९
२७	योगाव्दारा वृध्दावस्थेत निरोगी राहण्याचा मंत्र	डॉ. लीला बनसोडे	१०३
२८	माळवा प्रांतातील मराठेकालीन प्रशासन व्यवस्था	डॉ. सुशीलकुमार शंकरराव सरवदे	१०५
२९	मन्नु भंडारी कृत आपका बंटी : अभिव्यंजना शिल्प	प्रा. डॉ. सुलक्षणा जाधव संज्योती जगन्नाथ रोठे	१०८
३०	इक्किसवी सदी की हिंदी कविताओं मे व्यक्त नारी चित्र	प्रा. डॉ. द्वारका गिते-मुंडे	१११
३१	स्त्री विमर्श हिंदी साहित्य में नारी जीवन	प्रा. डॉ. न.पु. काळे	११४
३२	दलित जीवन की व्यथा और मुक्तिपर्व	प्रा. डॉ. पवन नागनाथराव एमेकर	११७
३३	संतसाहित्यातून प्रकट झालेले पर्यावरण विषयक दृष्टिकोन	प्रा. प्रधान रामकृष्ण ज्योतिबा	१२०
३४	आदिवासींची सांस्कृतिक पार्श्वभूमी	प्रा. डॉ. जगतवाड एस. पी.	१२४
३५	Exchange Rate and Foreign Trade of India : An Analysis of the Causal Relationship (१९९०-९१ to २०१०-११)	Dr. Maroti V. Tegampure	१२६
३६	सत्यशोधकीय विचाराच्या प्रसार प्रचारात कादंबरीचे योगदान	डॉ. सौ. जयदेवी पवार	१३०
३७	सत्य और असत्य और लड़ाई नाटक	प्रा. बिरादार उमाकांत अनेप्पा	१३४
३८	अहिल्याबाई होळकरांनी भिल्ल आदीवासी जमातीसाठी केलेले प्रशासकीय कार्य	सोनवणे सुजाता रामदास	१३६
३९	देवनागरी लिपि का स्वरुप एवं महत्त्व	डॉ. मीना खरात	१३९
४०	मराठी नाटकाची आरंभीक स्थिती	डॉ. गजानन पां. जाधव	१४१
४१	तुळाजी आंग्रे आणि बाळाजी बाजीराव संबंध	प्रा. डॉ. एम. जी. मोरे	१४४
४२	नोटा बंदीने काय साधले	प्रा. डॉ. भगवान सांगळे	१४६
४३	Re-engineering in Academic College Library	Dilip Bhagwan Doifode	१५०
४४	भीष्म साहनी के उपन्यासों में स्त्री मुक्ति	संजय एस. गायकवाड	१५३
४५	संत कबीर के विशेष संदर्भ में संत साहित्य और जीवन मूल्य	डॉ. सुभाष पवार	१५६
४६	मार्क्सवादी चिंतन - स्वरुप एवं उसका साहित्य पर प्रभाव	संजय एस. गायकवाड	१६०

स्त्री विमर्श

हिंदी साहित्य में नारी जीवन

प्रा.डॉ. न.पु. काळे
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
चौसाळा, ता.जि. बीड

साहित्य समाज का दर्पण कहलाता है | इसी न्याय से समाज की गतिविधियों का चित्रण आज के इक्कीसवीं सदी के साहित्य में भी दिखाई देता हैं | आज भद्र कहे जानेवाले समाज में वास्तव में नारी की क्या स्थिति रही है इसका चित्रण कथा साहित्य में यथार्थ रुप से किया गया हैं |

स्त्रीवादी साहित्य के संबंध में कहा जाता है कि जो व्यक्ति चाहे स्त्री हो या पुरुष नारी के अस्तित्व को बचाने की लढ़ाई में सक्रिय हो तो वह नारीवादी है और इस प्रकार लिखा जानेवाला नारीवादी साहित्य है | आज स्त्रीवादी साहित्य महिला लेखिकाओं द्वारा लिखा जा रहा है | स्त्री-विमर्श अपने वजूद को तलाशता हुआ आगे बढ़ा है |

इसके पूर्व साहित्य में नारी के प्रति सहानुभूति के रुप में लिखा जाता था लेकिन जब से स्वयं महिला लेखिकाओं ने कलम को अपना कर लिखना शुरु किया तो साहित्य में सहानुभूति की जगह स्वानुभूति को स्थान मिला | सुभद्राकुमारी चौहान के शब्दों में "स्त्रियों के सहयोग के बिना मानव साहित्य संपूर्ण नहीं हो सकता | एक पुरुष किसी पुरुष की हृदयानुभूति को सफलतापूर्वक प्रकट कर सकता है | परंतु जब वह स्त्रियों की अनुभूति को प्रकट करने जाता है तब उसे विवश होकर कल्पना से ही काम लेना पड़ता हैं |"[१] इक्कसवीं सदी में हिंदी साहित्य में महिला लेखिकाओंने सही मायने में स्त्री-मुक्ति के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है |

अपनी लेखनी द्वारा समाज में आज नारी को जो स्थान है उसे दर्शा कर परम्पराओं से चली आ रही अपनी अबला की छवी को तोड़ने का काम किया हैं एवं वह अब अबला नहीं सबला है, आत्मनिर्भर है उसका अपना स्वतंत्र अस्तित्त्व है यह विचार सामने लाया है | क्योंकि इसके पूर्व स्त्री को समाज में एक वस्तू के रुप में प्रस्तुत किया जाता था|

जन्म से हम सब इंसान है लेकिन पुरुष प्रधान संस्कृति द्वारा नारी को हमेशा से दोहरा स्थान देकर उस पर अन्याय किया गया | उसे दूर्बल, अबला, पीड़ित, दासी, भोग्या के रुप में देखा गया है | उसे एक संपूर्ण इंसान के रुप में स्विकार नहीं किया गया था, सच कहें तो पुरुषी व्यवस्था द्वारा उसे जान बुझकर, सोच, समझकर अबला के रुप में ही सदीयों तक स्विकार गया है | लिंग भेद के अंतर को छोड़े तो नारी पुरुष से किसी भी रुप में, क्षेत्र में पीछे नहीं है | एक ओर हमारी संस्कृति उसे देवी के रुप में देखती हैं लेकिन उसकी पुजा नहीं की जाती| बुतों की पुजा कर हमारी व्यवस्था नारी पर जुतों को बरसाती आ रही है | अब इस अन्यायी व्यवस्था का मूँहतोड़ जवाब देने के लिए कहानी, उपन्यासों के नारी पात्र आगे बढ़ते है तथा व्यवस्था से मुक्ति के लिए संघर्ष को अपनाते है |

स्त्री-पुरुष दोनों को समान रुप से देखना चाहिए | कानून दोनों को समता के तत्त्व से समान तो मानता है लेकिन सामाजिक व्यवस्था अभी भी उसे दोहरा स्थान देती दिखाई देती है | नारी विमर्श में हम नारी के पीछड़ेपन के कारणों तथा उनके सुधार के लिए किये गए प्रयत्नों की चर्चा करेंगे | नारी की पहचान माँ, बेटी, पत्नी, बहन आदि के रुप में की जाती है | साथ ही वह जिस तरह विभिन्न नामों से पहचानी जाती है वहीं वह शोषित, पीड़ित, भोग्या, दासी आदि रुपों में भी दिखाई देती है |

नारी का सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, मानसिक, सांस्कृतिक, आर्थिक सभी प्रकार से उसका शोषण होता आ रहा है और इस शोषण से मुक्ति पाने के लिए वह प्रयत्नशील है | हिंदी के उपन्यास, कहानी क्षेत्र में नारी चेतना को जगाने का काम

जिन्होंने किया उनमें- मन्नु भंडारी, उषा प्रियावंदा, मालती जोशी, दीप्ती खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, राजी शेठ, चित्रा मुदगल, महाश्वेता देवी, ममता कालिया, प्रभा खेतान, मैत्रयी पुष्पा, नासिरा शर्मा, अमृता प्रीतम, कृष्णा सोबती आदियों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है | इनके द्वारा लिखित साहित्य को पढ़कर सामान्य नारी अपने अस्तित्त्व के प्रति सचेत होकर व्यवस्था से लढ़ने के लिए तैयार होती है |

अमृता प्रीतम का आधुनिक युग की सशक्त एवं लोकप्रिय साहित्यिक विधा में महत्त्वपूर्ण लेखिका के रुप में स्थान है | उनके उपन्यासों का मुख्य विषय नारी और उसकी वेदना रहा है | पुरुष प्रधान समाज व्यवस्था में नारी का सदैव शोषण होता आया है | नारी जीवन अन्याय और अत्याचारों का इतिहास रहा है | इस अन्याय, अत्याचारों से छुटकारा पाने की लालसा प्रीतम के साहित्य में दिखाई देती है | प्रीतमजी के नारी पात्र व्यवस्था से सवाल करते है | उनके साहित्य में व्याप्त नारीयाँ अपना निर्णय स्वयं लेती है | उनके साहित्य में नारीयों का दो प्रमुख रुप में चित्रण किया गया है |

१. यातनाओं को चुपचाप सहनेवाली नारी |
२. यातनाओं के खिलाफ आवाज उठाने वाली नारी |

प्रीतम के 'बंद दरवाजा' उपन्यास में मध्यमवर्गीय नारी को दी जानेवाली यातानाओं का चित्रण किया है| यातानाओं को झेलकर ताड़ा की मृत्यु हो जाती है | तारा के माध्यम से अमृताजी ने परम्परागत नारी-जीवन की व्यथा को प्रस्तुत किया है |

'सागर और सीपीयाँ' में 'अनवरी' एक धोबी की पुत्री है वह जिसके घर कपडे धोने का काम करती है उस घर का मालिक उसकी इज्जत लूट लेता है |

प्रीतमजी के स्त्री पात्र पुरुषों के अत्याचारों से ग्रस्त है | आज यह चित्र सर्रेआम दिखाई देता है | सिनेमा का नायक शायनी आहूजा ने घर पर नौकरानी का काम करने वाली के साथ बलात्कार किया था|

साथ ही अमृता प्रीतम के साहित्य में नारी का आधुनिक रुप भी दिखाई देता है | 'रंग का पता' में 'कैली' का पति लखेशाह अपनी बीमा राशी पाने के लिए उसे बीमा अधिकारी के पास रात गुजारने के लिए भेजता है पर कैली वहाँ से भाग कर दीपक के पास जाकर दोनों ब्याह किये बिना साथ रहते है |

दीप्ति खंडेलवाल की 'कोहरे' उपन्यास की स्मिता अपने पति सुनिल को उसके गर्लफ्रेंड के साथ रंगेहाथ पकड़ती है और ऐसे दूराचारी पति के साथ न रहकर वह अपने पिता के साथ रहती है | तलाक लेकर हमेशा के लिए मुक्त होती है | यह स्मिता आज के नारी का प्रतिनिधित्त्व करती है जो आत्माभिमानी एवं आत्मनिर्भर है |

चित्रा मुदगल के 'एक जमिन अपनी' की अंकिता एक शिक्षित नारी है | उसका पति व्यसन में लीन रहनेवाला है | अंकिता उसे समझाने का सुधारने का प्रयास करती है लेकिन उसका पति अपनी आदतों से बाज नहीं आता अतः अंकिता हाथ की चूड़ियाँ, बिछुएँ निकालकर फेंकती है और पति का घर त्याग कर मायके चली जाती है |

कृष्णा सोबती की रचना अपनी शैली के कारण पहचानी जाती है | समाज की वास्तविकता उनके साहित्य में दिखाई देती है | 'डार से बिछुडी हुई' की पाशो अपने पुराने संस्कारों में जकड़ी हुई है | 'मित्रो मरजानी' स्त्री की विपुल वासना का चित्रण करने वाला उपन्यास है | 'सूरजमुखी अंधेरे के' की रक्तिका पर बचपन में ही बलात्कार हुआ है उसकी पीड़ा को मुखर किया है | "कृष्णा सोबती स्त्री-पुरुष की काम-वासना का चित्रण करने के अर्थ में जैसे बोल्ड मानी जाती है वैसे ही दफ्तरी जिंदगी के भीतर चलनेवाले लेन-देन, ठेके-कमिशन के शाही धंधों की परतों को कलम के अस्त्र से काटकर, सब कुछ नंगा करके सामने रखने के अर्थ में भी वह बोल्ड ही हैं |"[१]

मालती जोशी ने बेमेल विवाह आपसी रिश्तों को पति-पत्नि की व्यवस्था, नारी का अत्याचार को सहना, परित्यक्ता आदि का चित्रण किया है |

प्रभाखेतान ने 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में नारी यातना, विद्रोह, मुक्ति को स्थान दिया है | उपन्यास में अपनों द्वारा किये गये

बलात्कार का चित्रण किया है |

ममता कालिया की कहानियों में घर का त्रासदी पूर्ण जीवन की समस्याएं तथा राजनीति की विसंगतियों को भी रेखांकित किया हैं | 'बेघर' उपन्यास की नायिका संजीवनी कुँआरेपन की कसौटी पर खरी नहीं उतरती, इसलिए उसका पति उसे त्याग देता है |

मन्नू भंडारी ने 'आपका बंटी' में पति-पत्नी के अहंकार का आपस में टकराना एवं विवाह का विच्छेद हो जाना तथा बंटी की मानसिकता हो दर्शाया है | सूर्यबाला के 'सुबह के इंतजार तक' की मानू धोखे से बलात्कार की शिकार होने के बाद न केवल सहज जीवन जीती है बल्कि गर्भ में पल रहे बच्चे के लिए समाज का सामना भी करती है, जो अपराध उसने किया ही नहीं उसका दंड वह क्यों भुगतें ?

मृदुला गर्ग के 'उसके हिस्से की धूप' नारी जीवन की आत्म-सार्थकता की तलाश करनेवाला उपन्यास है | मनिषा जितेन विवाहित है | वह अपने वैवाहिक जीवन से खुश नहीं है | जितेन की व्यस्तता से उबकर वह मधुकर नामक प्राध्यापक से विवाह करती है | कुछ दिनों के बाद वह मधुकर से भी उब जाती है और जितेन से शारीरिक संबंध स्थापित करती है | सही मायने में आज स्त्रीवादी साहित्य महिला लेखिकाओं द्वारा लिखा जा रहा है | स्त्री-विमर्श अपने वजूद को तलाशता हुआ आगे बढ़ा है |

नारी पुरुष द्वारा परम्परागत रुप से चले आ रहे बंधनों को तोड़कर मुक्त होना चाहती है | नारी का नारी मुक्ति विभिन्न रुपों में चाहिए जैसे वह दासी नही सहचारिनी बनना चाहती है | वह अबला के स्थान पर सबला बनना चाहती है | वह स्त्री-पुरुष में समानता चाहती है |

१. वह दासी नहीं सहचारिनी बनना चाहती है |
२. वह अबला के स्थान पर सबला बनना चाहती है | वह स्त्री-पुरुष में समानता चाहती है |
३. विवाह में अपना निर्णय स्वयं लेना चाहती है |
४. ब्याह होने पर यदि पति के साथ किसी भी वजह से पटता नहीं तो उससे अलग होना चाहती है |
५. दहेज का विरोध करती है |
६. आत्मनिर्भर बनना चाहती है |
७. पुरुष के वर्चस्व समझे जानेवाली सेवाओं में कार्य कर अपनी योग्यता दिखा रही है | वह अर्थ की दृष्टि से पुरुष पर निर्भर नहीं रहना चाहती |
८. पारम्पारिक रहन-सहन को त्याग कर आधुनिक नारी पाश्चात्य संस्कृति को अपना रही है |

अत: साहित्य में व्याप्त नारी चाहें वह शिक्षित, अशिक्षित, पूँजिपति, निम्न, मध्यवर्ग, शहरी, देहाती, कृषक हो सभी प्रकार की नारीयाँ अपने हक के प्रतिजागरुकता को अपनाती है वह व्यवस्था का विरोध कर रही है | नारी-समस्या को जन्म देनेवाली पुरुष प्रधान विकृत सामाजिक व्यवस्था को वह खदेडकर अपना वजूद निर्माण कर रही है |

संदर्भ सूचि -

१. समकालीन महिला लेखन - डॉ. ओमप्रकाश शर्मा - पृ. ५६
२. मृदुला गर्ग के कथा साहित्य में नारी - डॉ. रमा नवले - पृ. ६०

❖ ❖ ❖ ❖

2017-18 2017-2018

UGC Approved Journal
Sr. No. 64310

ISSN 2319-8648

Indexed (IIJIF)

Impact Factor - 2.143

Current Global Reviewer

UGC Approved International Refereed Research Journal Registered & Recognized
Higher Education For All Subjects & All Languages

Special Issue

Issue I, Vol I 10th February 2018

Editor in Chief
Mr.Arun B. Godam

www.rjournals.co.in

2017 - 2018

16	इक्कीसवी सदी के हिन्दी काव्य में बाजारवाद	स.प्रा.मुजावर एस.टी.	42
17	वैश्वीकरण के दौर में बदलते पारिवारिक मूल्य विशेष संदर्भ - आपका बंटी : मन्नू भंडारी	प्रा. डॉ. चित्रा धामणे	45
18	"वैश्वीकरण तथा अनुवाद"	डॉ. पवार विक्रमसिंह विजयसिंह	48
19	'वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य के अंतर्गत प्रस्तुत शोधालेख' "डॉ.शंकर शेष का हिन्दी नाटक साहित्य में योगदान"	प्रा.संजय व्यंकटराव जोशी	51
20	हिन्दी कहानी और वैश्वीकरण	प्रा.विनायक कापावार	54
21	"वैश्विकरण के परिप्रेक्ष्य में हिंदी ग़ज़ल और किसान"	डॉ. मनोजकुमार ठोसर	57
22	मोहनदास नैमिशराय के उपन्यास 'आज बाजार बंद है' में चित्रित वेश्या जीवन	प्रा. अशोक गोविंदराव उघडे	60
23	"विधाओं के लिए कथा एवं पात्रों के चयन का महत्त्व"	प्रा.डॉ. न.पु. काळे	63
24	वैश्वीकरण और स्त्री- विमर्श	सौ.मोहिनी रनजित कुटे	67
25	"बाजारवाद के परिप्रेक्ष्य में काल कोठरी"	प्रा. रामहरी काकडे	70
26	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में उपन्यासों में विधाओं का सम्मिश्रण	रविंद्र कारभारी साठे	72
27	वैश्विकरण : डॉ. कुसुम कुमार के नाटकों के संदर्भ में	डॉ. सविता कचरू लोंढे	75
28	वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता	संतोष नागरे	78
29	वैश्वीकरण और बाजारवाद	भोई बनसिंग	82
30	"वैश्वीकरण के अंधकार में हिंदी का घटता स्तर"	रुबीना शमीम खान	83
31	वैश्विकरण के दौर में हिन्दी भाषा का स्थान	शेख अब्दुल बारी अब्दुल करीम	86
32	जागतिकीकरण और हिंदी उपन्यासों में आदिवासी चिंतन	डॉ.शेख अफरोज फातेमा सय्यद टिपुसुलतान सय्यदनुर	88

CURRENT GLOBAL REVIEWER
ISSN : 2319 – 8648 Impact Factor : 2.143 SPECIAL ISSUE Issue I , Vol I , 10th Feb. 2018

"विधाओं के लिए कथा एवं पात्रों के चयन का महत्त्व"

प्रा.डॉ. न.पु. काळे
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चोसाळा, ता.जि. बीड |

----------(23)----------

साहित्य मनुष्य को मनुष्यता सिखाता है | जिस कृति में सहि मायने में समाजहित की कामना दिखाई देती है उसी को साहित्य स्वीकार किया जाता है | आज साहित्य की विविध विधाओं में समाज के साथ बना हुआ उसका रिश्ता दिखाई देता है, यह बहुत बडी उपलब्धी मान सकते हैं | क्योंकि साहित्य में कल्पना की प्रचुरता या मनोरंजन की जगह समाज की पीड़ा को स्थान दिया गया है | जिन-जिन साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के लिए समाज में घटित विभिन्न स्थितियों को उठाया, प्रश्नों को उठाया, समाज के प्रश्नों को उठाकर विचार प्रक्रिया को बढावा देकर समस्या का हल ढुंढने का यत्न किया उन सभी की साहित्यिक कृतियाँ आज भी महत्त्वपूर्ण है | वह कृतियाँ आज भी हमें प्रासंगिक लगती है क्योंकि वह कथा के सूत्र व पात्र एवं वह समस्या, स्थिति हमें समाज में जैसे को वैसे दिखाई देती हैं |

प्रेमचंद की विभिन्न रचनाओं को दख सकते है, उनकी कहानी एवं उपन्यास के पात्र हमें, हमारे इर्द-गिर्द दिखाई देते है | जो पूँजीपती वर्ग विभिन्न माध्यमों द्वारा सर्वहारा वर्ग का शोषण कर रहा है एवं धर्म के ठेकेदार, धर्म के नाम पर अधर्म का व्यवहार करके आम-आदमी को ठगते है | बुरी परंपरा को ढोते हुए आज भी आम-आदमी कुचल रहा है | इसकारण कफन, गोदान की सार्थकता तो इ लकती तो है साथ ही सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक आदि परिस्थितियों में थोडा बहुत बदलाव जरुर दिखाई देता तो है लेकिन जो आम-आदमी के शोषण की मूल रीढ की हड्डी रही है वह आज भी उसी मूल रुप में है | प्रेमचंदजी की कथा एवं उसके पात्र समाज की मिट्टी से उभरे हुए है इसकारण वह अपना अस्तित्त्व बना पाये हैं |

भीष्म साहनीजा का तमस भले ही देश के विभाजन एवं त्रासदी को दर्शाता हो आज हम स्वतंत्र मुल्क में, हमारी स्वतंत्र संवैधानिक व्यवस्था में रह रहे हो लेकिन अपने स्वार्थ के लिए वहीं हलचल आज की अपनी व्यवस्था में भी दिखाई देती है | जिसे देखकर बुद्धीजिवियों को यह डर हमेशा लगता है की कोई और बँटवारा तो होगा नहीं हमारे देश का !

राजनीतिक व्यवस्था पर दूष्यन्तकुमार, धूमिल इन्होंने जो कोड़े बरसाये हैं वह उचित लगते है | इन कवियों ने अपनी समकालीन विभिन्न परिस्थितिओं को देखकर एक दृष्टी रखकर उसे शब्दों का रुप देकर विधाओं में स्थान दिया था इसकारण वह कविता, गजल अपना सही अर्थ आज भी दर्शाती हुई दिखाई देती हे जो एक नई व्यवस्था की ओर ईशारा करती हुई दिखाई देती है | "धूमिल की विकसित दृष्टि का यह परिणाम है | धूमिल को समकालीन भारतीय परिवेश के यथार्थ की गहरी समझ थी और इस अमानवीय अन्यायपूर्ण व शोषणयुक्त राजनीतिक-सामाजिक व्यवस्था को बदलने के लिए उनकी अपनी दृष्टि विकसित हो चुकी थी|"[१]
कवि लिखते है-

"रोशनी जहाँ सबसे तेज है
दुश्मन वहीं रहते है |"[२]

आज भी यह पंक्तियाँ समाज का यथार्थ चित्रण करती हुई दिखाई देती है | आम-आदमी शोषण, दु:ख दर्द, बेरोजगारी, यौनशोषण आदि के अंधेरे में तडप रहा है, बिलग रहा है | आम-आदमी की जिंदगी को नर्क बनानेवाले समाज व्यवस्था के कुछ मुठ्ठी भर पूँजिपती लोग रोशनी में रहते है | इस अंधेरे को कवि केवल दर्शाता नहीं है बल्कि वह अंधेरा हमें ही हटाना पड़ेगा इसलिए कवि वह मार्ग भी हमें बताते है -

"अगर चाहते हो
कि हवा का रुख बदले
तो एक काम करो
संसद जाम करने से बेहतर है
सड़क जाम करो
दुश्मन वहीं रहते है |"[३]

धूमिल ने लोगों को, जो अंधेरे से घेरे है एवं अंधेरे में ही जीवन यापन कर रहे हैं उन्हें हरकत में लाने का अपनी कविताओं के माध्यम से प्रयास किया | लेकिन जो पीडित है वह हरकत में आने के लिए तैय्यार ही नहीं है | दुष्यन्तकुमार लिखते है-

"यहाँ तो सिर्फ गूँगे और बहरे लोग बसते हैं,
खुदा जाने यहाँ पर किस तरह जलसा हुआ होगा |"[४]

बुद्धिजिवि कवियों ने अपने समाज का यथार्थ से चित्रण करते हुए परिवर्तन को चाहा है जिससे सामाजिक समता का निर्माण हो सके | लेकिन इस सामाजिक समता का निर्माण तभी होगा-

"हर सडक पर, हर गली में, हर नगर, हर गाँव में,
हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए |"

साहित्य को जनमानस के करीब लाने का प्रयास रचनाकारों द्वारा किया गया है | कभी कथा, पात्रों के माध्यम से तो कभी विधाओं का लेखन करने के लिए जनमानस की भाषाओं का जानबुझकर प्रयास किया गया है | नारायण सुर्वे लिखते हैं-

"जसा मी जगत आहे तसाच मी शब्दात आहे"

हिंदी में नागार्जुन की कविता समकालीन राजनीतिक व्यवस्था पर सिधे चोट करती हुई दिखाई देती है | चुनाव, जातिवाद, बेरोजगारी, प्रजातंत्र का खोखलापन, राजकीय नारेबाजी, अकाल जैसे कई समस्याओं को नागार्जुन इन्होंने उठाया है |
रचनाकारोंने केवल समाज का चित्रण ही नहीं किया बल्कि साथ-साथ उनका भोगा हुआ जीवन भी उन्होंने यथार्थ रुप से अभिव्यक्त किया है | इस अभिव्यक्ति में कोई नाटकीयता नहीं है | "मैं एक साधारण आदमी हूँ और इतिहास और सामाजिक स्थितियों के संदर्भ में, साधारण आदमी की पीडा, उत्तेजना, दबाव, अभाव और उसके संबंधों के उलझावों को जीता और व्यक्त करता हूँ |"[५] इसी कारण धूमिल की कविता 'मोचीराम' का पात्र आज भी चौराहे पर दिखाई देता है, साथ ही उस कविता में जिसे चित्रित किया गया है वह स्थिति आज भी दिखाई देती है |

अमृता प्रितम के उपन्यास, कविता के संदर्भ में बात करें तो स्पष्ट होता है कि, उनकी रचनाओं में चित्रित कथा एवं पात्रों की त्रासदी वह दुःख उनका अपना स्वयं का रहा है | आस-पास समाज में जो घटित हुआ वह मौका मिलने पर रचनाओं में आता गया | रचनाओं में इन पात्रों को, घटनाओं को स्थान मिलने के लिए कभी सालों का समय लगता है तो कभी तुरंत भी वह स्थान मिलता है | अचेतन मन में वह सोचने की प्रक्रिया निरंतर रुप से चलती रहती है जो उचित समय पर शब्दों द्वारा पात्रों के, कथा के रुप में फिर से जिवित होते हुए दिखाई देते है | "लेखक के अपने जीवन की घटनाएँ उपन्यासों-कहानियों के पात्रों में सदा ढलती हैं, छाती के भीतर से उठती हैं, कागजों पर जा उतरती हैं |"[६]

निष्कर्ष :-

निष्कर्ष रुप से कह सकते हैं की, रचनाकार अपनी कृतियों के माध्यम से अपनी स्वानुभूति को, समाज के दुःख दर्द को स्थान देता है | वह अपनी कलम के द्वारा समाज का आईना समाज को ही दिखाकर उसे हरकत में लाने का भरसक प्रयास करता हुआ दिखाई देता है |

इसलिए वह अपनी रचनाओं में विद्रोह को स्थान देता है | व्यवस्था का विरोध करता है | सर्वहारा वर्ग के प्रति उसकी हमदर्दी मनुष्यता की सही पहचान दर्शाती है | इसकारण जिन-जिन रचनाओं का धरातल सामाजिक समता की स्थापना रहा है वह सभी रचना आज भी प्रासंगिक लगती है | क्योंकि रचनाकार सामाजिक विषमता को मिटाने के लिए संघर्ष करता है -

"जीवन के सारे खतरे मुझे झेलने पडेंगे,
सिर्फ इस कलम के सहारे
सारे पापड़ बेलने पडेंगे |
बड़े-बड़े पर्वत धकेलने पड़ेंगे
मैं जानता हूँ घबराकर घुटना अच्छी बात नहीं है |
लेकिन यह एक संभावना है..."

मनुष्य के भीतर मनुष्यता का विकास ही साहित्य का लक्ष्य रहा है | अमृता प्रीतम के शब्दों में- "मुझे लगता है सारी जिन्दगी जो सोचती रही, लिखती रही, वह देवताओं को जगाने का एक यत्न था, उन देवताओं को, जो इन्सान के भीतर सो गए हैं |"[७]

संदर्भ :-

१. समकालीन बोध और धूमिल का काव्य - डॉ. हुकुमचंद राजपाल- पृ. २३०
२. सुदामा पांडे का प्रजातंत्र - धूमिल- पृ. ५९
३. वही - धूमिल - पृ. ७२
४. साये में धूप - दुष्यन्तकुमार - पृ. १५
५. जलते हुए वन का वसन्त - दुष्यन्तकुमार - पृ. ०७
६. रसीदी टिकट - अमृता प्रीतम - पृ. १००
७. वही - अमृता प्रीतम- पृ. १३३

2017-18 2017-2018

Aarhat Publication & Aarhat Journal's

ELECTRONIC INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (EIIRJ)

Peer Reviewed Interdisciplinary Research Journal

ISSN- 2277-8721

Online and Print Journal

Impact Factor: 5.20 (EduIndex)

UGC Approved Journal No - 48833

10th March, 2018

Vol VII Issues No X

Chief Editor

Ubale Amol Baban

Assistant Professor.....
Mrs.K.S.K.College,Beed-431122

Chief Editor

Prin. Dr. Purandhar Dhanpal Nare

34	प्रा.पटेल एफ.एन	उच्चशिक्षण आणि मुस्लीम समाज	149
34	डॉ. मोहमद शफी	उर्दु आदब की तहरिकात और रुजहानात	153
35	आफिया उज्मा	महाराष्ट्र में उर्दू जबान में आला तालीम की सूरते हाल	158
36f	डॉ. अतीक कुरेशी	रियासते दख्खन में उर्दु का दौरे उरुज	162
37	डॉ.आर.आर.कांबळे	डॉ.आंबेडकरांचा बहुजन हक्कासाठींचा लढा	165
38	डॉ. सीमा नाहीद	हमारे मुल्क में आला तालीम का निजाम दरपेश मसायल और इनका हल	168
39	डॉ. शेख अफाक अंजुम	आला तालीमी निसाब और असनाफ	170
40	राजेंद ननावरे	ओमप्रकाश वाल्मीकि की आत्मकथा में दलित चेतना ('जूठन' के संदर्भ में)	172
41	डॉ संजय चिंदगे	हिंदी दलित काव्य में चित्रित सामाजिक विद्रोह	177
42	प्रा प्रकाश शिवभक्ते	वसाहतकालीन शिक्षण पद्धतीचे भारतीय समाजावर झालेले परिणाम	181
43	डॉ.खंडेराव शिंदे	कारुंडे-डवरी गोसाव्यांचे सुप्रीम कोर्ट	187
44	Sou Bhojkar Sudnyanee S.	Personality Factors, Intelligence Quotient And Emotional Intelligence Among College Students Living In Slum Area Of Kolhapur City	193
45	R.L.Kore	Regional Variations In Educational Status In Sindhudurg District Of Maharashtra	199
46	Miss. Archana Bhupal Nandagave	English Language Teaching and Learning in Higher Education	206
47	Dr. Bhima Haribhau Mane	Physical Exercise And Wellness For Promotion Of Healthy Life	208
48	प्रा.डी.एस.क्षीरसागर	भारतातील उच्च शिक्षणाची सद्यस्थिती आणि बेरोजगारीची समस्या :एक विश्लेषण	210
49	Dr. Jayant Anant Kulkarni	Teaching and Learning Communication Skills in Rural Colleges: A Social Reality	219
50	Mr. N. D. Tadsare	Mobile Based Services: Types of Services & Challenges	223
51	प्रा.डॉ.न.पु.काळे	'साये में धूप ' में अभिव्यक्त राजनितिक चित्रण	226
52	श्रीमती.माधुरी कांबळे	शिक्षा व्यवस्था और एक और द्रोणाचार्य	230

Assistant Professor.....
Mrs.K.S.K.College,Beed-431122

'साये में धूप' में अभिव्यक्त राजनीतिक चित्रण

प्रा.डॉ. न.पु.काळे
कला एवं विज्ञान महाविद्यालय,
चौसाळा, ता. जि. बीड

दुष्यंत कुमार त्यागीजी का 'साये में धूप' यह गजल संग्रह १९७५ में प्रकाशित हुआ। साये में धूप से दुष्यंत कुमार बहुचर्चित गजलकार के रुप में सामने आये। उनकी गजलों में जिस वजह से गजल को 'प्रेमिका से वार्तालाप' के कारण पहचाना जाता है, वैसा चित्रण नहीं है बल्कि उनकी गजल समाज का वास्तविक चित्रण बयान करती है। वह आम–आदमी को अपने हक से परिचित करती हुई उसे व्यवस्था का असली चेहरा दिखाकर एक ओर व्यवस्था का पर्दाफाश करती है साथ ही साथ दूसरी और परिवर्तन की गुहार भी लगाती है।

"दुष्यंत कुमार की गजलों में सर्वत्र राजनीतिक चिन्तन दृष्टिगोचर होता है। दुष्यंत समाज की दु:खद स्थितियों के लिए देश की सम–सामायिक राजनीति को ही दोषी मानते हैं।"१ दुष्यंत कुमार की गजलों का एक पहलू राजनीति का रहा है। कवि को समकालीन राजनीति की सही समज रही है। आम–आदमी का दु:ख, दर्द, पीडित जनता की समस्या एवं राजनीतिक व्यवस्था की उदासिनता से कवि निराश है। इसी कारण दुष्यंत कुमार ने अपनी गजलों के माध्यम से जनता को सियासत के हथकंडो से परिचित किया है। १९६० के बाद की मोहभंग की स्थिति को वे दर्शाते हैं।

स्वतंत्रता प्राप्ती के बाद जो हमारी शासन व्यवस्था बनी उससे लोगों को कई अपेक्षाएँ थी। लोगों ने कई सुनहरे सपने देखे थे। लेकिन अपनी शासन व्यवस्था, अपनी–हमारी सरकार बनने के बावजूद भी व्यवस्था में कोई खास बदलाव आया नहीं। आजादी का फायदा कुछ सीमित लोगों तक ही पहुँच पाया। आम–आदमी की दासता तो वैसी ही रही। इसी कारण स्वतंत्रता प्राप्ती से क्या हुआ? यह सवाल सहज ही गजलकार के मन मे उठ सकता है। इसको लेकर दुष्यंतकुमार लिखते हैं–

"हमको पता नहीं था हमें अब पता चला,
इस मुल्क में हमारी हुकूमत नहीं रही।"२

अपनी हुकूमत में शोषण–दमन, स्वार्थ का नामो–निशान नहीं रहेगा, सबको उत्कर्ष के अवसर प्राप्त होंगे। सामान्य जनता को भी सुख परक सुविधाओं की प्राप्ती होगी। हर एक गाँव, शहर रोशनी से सराबोर होगा यह सपना हर किसी ने देखा था। लेकिन वह 'सपना' ही रहा। राजनेताओं ने लोंगों को केवल सपने ही दिखाये। दुष्यंत कुमार इस स्थिति को मार्मिकता से उजागर करते हैं–

"कहाँ तो तय था चिरागाँ हरेक शहर के लिए
कहाँ चिराग मयस्सर नहीं शहर के लिए।।"३

Assistant Professor
Mrs.K.S.K.College,Beed-431122

राजनीति में अक्सर बोला कुछ और जाता है और वास्तव में किया कुछ ओर जाता है। राजनेताओं की कथनी एवं करनी में अंतर होता है। व्यवस्था आम–आदमी के साथ, उसके सपनों के साथ, उसके जीवन के साथ खिलवाड करती रहती है। आम–आदमी को केवल एक मतदाता के रुप में देखा जाता है। चुनावी माहौल में राजनेता लोग आम–आदमी को कभी राहत के सपने दिखाकर तो कभी नोट का लालच या शराब का चसका तो कभी बोटी की दावत देकर, कभी प्यार से तो कभी समय पर डरा–धमकाकर जनता का किंमती वोट अपने झोली में डालने की हर एक कोशिश राजनीतिक व्यवस्था द्वारा की जाती है। इस स्थिती में सामान्य व्यक्ति को केवल खिलौने के रुप मे देखा जाता हैं इसी कारण दुष्यंत कुमार को लिखना पडा–

"जिस तरह चाहों बजाओं इस सभा में
हम नहीं है आदमी, हम झुनझुने हैं।"४

हमारे देश की संसद में आम–आदमी के हक के लिए कानून बनने चाहिए इस हेतु संसद का निर्माण हुआ है। देश हित, सामान्य जनता की बुनियादी जरुरतें एवं अन्य समस्याओं को हल करने का दायित्व संसद अर्थात हमारे प्रतिनिधियों का है, लेकिन दुष्यंत कुमार के समकालीन राजनीतिक व्यवस्था में भी स्थिति वहीं थी, जो आज है। संसद में केवल चर्चा, बहस होती है, दुष्यंत कुमार लिखते हैं–

"भूख है तो सब्र कर, रोटी नहीं तो क्या हुआ,
आजकल दिल्ली में है, जेरे बहस ये मुद्दआ।"५

कहाँ जाता है की राजनीति शैतानी दिमाग, हथकंडो का अड्डा होता है। तो भला शैतानी दिमाग कब क्या करेगा किसको पता? वह अपने स्वार्थ के लिए अपनी कुर्सी को बचाने के लिए लोगों को जाति, धर्म, वर्ण के नाम पर, आतंक फैलाकर, अच्छे दिनों की गुहार लगाकर, मंदिर–मस्जिद का डर दिखाकर, दंगे–फसाद कराकर, आरक्षण, संविधान बचाओं के नाम पर, इतिहास के गडे–मुर्दों को उरेककर, सत्यवादियों का कत्ल करके जनता के बीच अलगाव लाया जाता है और इन्सान को इन्सान का दुश्मन बताकर अपनी सियासत का ताज बरकरार रखा जाता है। यह व्यवस्था की चालबाजी सामान्य जनता के समझ से परे है। खादी के पीछे छुपा शैतानी चेहरा सामान्य जनता को दिखाई नहीं देगा दुष्यंत कुमार को लिखना पडा–

"मस्लहत–आमेज होते हैं सियासत के कदम
तू न समझेगा सियासत, तू अभी इन्सान है।"६

इसके साथ ही राजनीति में नारेबाजी करना आम बात मानी जाती है। चुनावी माहौल में तो सरेंआम नारे बाजी की जाती है। इन चुनावी 'जुमलों' से परिचित कराते हुए दुष्यंत कुमार–

"आज सडकों पर लिखे हैं सैकडो नारे न देख,
घर अंधेरा देख तू, आकाश के तारे न देख।"७

कह कर जनता को वास्तविकता से परिचित करते हैं। व्यवस्था चाहे कौन–सी भी क्यों न हो जनता को हर हाल में हलाल किया जाता है, उसका शोषण किया जाता है। लालफिताशाही, भ्रष्टाचार बढ गया है। आम–आदमी का आर्थिक, मानसिक, शारीरिक शोषण किया जाता है। कानून नाम का ही बना है। योजनाओं का भी वहीं हाल है। जनहित के नाम पर कई योजनाओं का निर्माण किया जाता है लेकिन वास्तविकता तो कुछ और ही होती है। व्यवस्था की पोलखोल करते हुए दुष्यंत कुमार लिखते हैं–

"यहाँ तक आते–आते सूख जाती है कई नदियाँ,
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।"८

संविधान की दुहाई देकर अपनी झोली भरनेवाले नेताओं की देश में कोई कमी नहीं है। संविधान के नाम पर अपनी झोली भरनेवाले राजनेताओं को आडे हाथों लेते हुए दुष्यंत कुमार–

"सामान कुछ नहीं फटेहाल हैं मगर
झोले में उसके पास कोई संविधान है।"९

सही मायने में दुष्यंत कुमार ने राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण करके व्यवस्था का घिनौना चेहरा दूनिया के सामने लाया है। स्वार्थी, दलबदलू, अँगूठा छाप, भ्रष्टाचारी खटमल जैसा खुन चुसनेवालों के चरित्र का पर्दाफाश दुष्यंत कुमार सरेंआम करते हुए लिखते है–

"तेरी जुबान है झूठी जम्हूरियत की तरह,
तू एक जलील–सी गाली से बेहतरीन नहीं।"१०

राजनीतिक व्यवस्था का चित्रण करके दुष्यंत कुमार खामोश नही रहते हैं बल्कि वह जनता को नींद से जगाकर परिवर्तन के लिए आवाज देते हैं, कवि आशावादी जो हैं–

"मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"११

ुष्यंत कुमार ने जिस परिवर्तन की बात कहीं थी शायद वह परिवर्तन आज भी अधूरा दिखाई देता है। सियासत में पार्टीयों का परिवर्तन चाहें जो भी हुआ हो लेकिन जनता का शोषण अब भी थमा नहीं है। दुष्यंत कुमार ने अपने समकालीन राजनीति का जो चित्र जनता के सामने रखा था वह घिनौना माहौल आज भी वैसे को वैसा ही दिखाई देता है, बल्कि दुःखद बात तो यह है कि वह घिनौना पन कई ज्यादा बढा हुआ दिखाई देता है।

समाज में अन्याय के खिलाफ आवाज उठाने का साहस लोक खो चुके हैं। नौं–जवान जो की परिवर्तन की नींव है वह आज बेरोजगारी एवं अलगाववादी राजनीति, भ्रष्टाचारी व्यवस्था का खुद शिकार हुआ है तो परिवर्तन की अपेक्षा किससे करें!

अत: कहना पड रहा है कि–

2017-18

MAH/MUL/03051/2012
ISSN-2319 9318

Vidyawarta UGC Jr.No.62759 UGC Approved Refereed Journal

6th ANNIVERSARY CELEBRATIONS 2018

Vidya warta ®

Issue-21, Vol-02, Jan. to March 2018

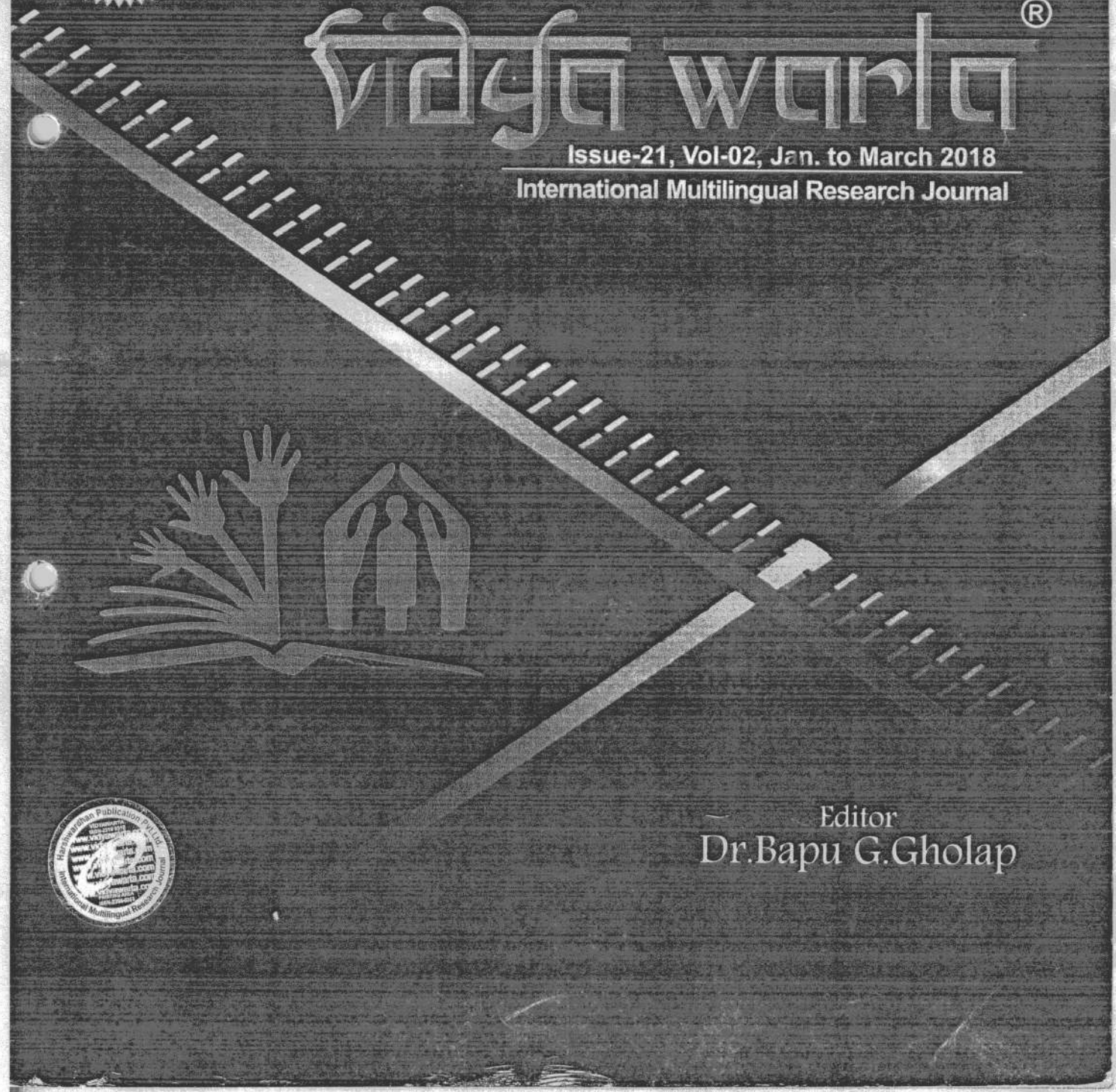

International Multilingual Research Journal

Editor
Dr.Bapu G.Gholap

2017-2018

14) Skill Development- Need of the hour
Manisha Agrawal || 63

15) INDIAN DEMOCRACY AND ITS EMERGING CHALLENGES.
MOUMITA GHOSH, LAKSAR HARIDWAR || 65

16) Proliferation of Horticulture and Perfumery during the Mughal Era
Dr. Bandana Singh, Lucknow || 70

17) SHOULD MILITARY BE STUDIED AS A SOCIETY?
DR. ASHA SOUGAIJAM, Kangpokpi district, Manipur || 73

18) OUT OF POCKET EXPENDITURE FOR VISITING HEALTH FACILITY BY ELDERLY.....
B. L. YADAV, Santiniketan, West Bengal || 79

19) Impact of SIDBI on the growth and performance of MSME's of Indore Division
Showkat Ahmad Lone, Mohd Rafiq Shah || 84

20) खानदेशातील बैलगाडी तयार करण्याच्या पध्दती
प्रा.डॉ. भामरे नानाजी दगा, अक्कलकुवा जि.नंदुरबार || 91

21) व्यसनाधिनतेची समस्या
प्रा.डॉ. मोटे गितांजली सदाशिवराव, बनसारोळा, || 95

22) पंडित नेहरु आणि धर्मनिरपेक्षता
हारगे महादेव माणिकराव, नांदेड || 98

23) अमरावती जिल्हातील प्रधानमंत्री ग्रामसडक योजना ग्रामीण विकासातील एक महत्वाचा स्त्रोत.....
डॉ. शशीकांत रु.कडू || 101

24) कबीर मानवता के पक्षधर
प्रा. डॉ. न.पु. काळे, चौसाळा, ता.जि. बीड || 104

25) भारतीय वर्ण व्यवस्था आणी उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत
महेश शामराव दाडगे, परळी वैजनाथ. || 106

26) उस्मानाबाद जिल्ह्यातील सोयाबीन कृषी उत्पादकतेचा भौगोलिक अभ्यास.....
प्रा. शिरमाळे महेबुबपाशा बाबूमीयॉ, डॉ. वाघमारे नामदेव केशवराव, || 108

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

वसलेली असून ग्रामीण भागाचा विकास साधणे फार महत्वाचे आहे. त्यासाठी गावे जोडणे महत्वाची आहे.

८. आपल्या देशातील लोकांकडे आज फार मोठया प्रमाणात वेळ आहे. आपला देश हा विकसनशील असून या देशात सर्वप्रथम मुलभूत सुविधांना महत्व दयायला पाहिजे. त्यासाठी बुलेट टेन ऐवजी ग्रामीण भागातील रस्त्याच्या सुधारणेला अग्रक्रम देणे गरजेचे आहे.

९. या देशातील अर्थव्यवस्थेचा विचार करता असे दिसून येते की, या देशात जेवढी आवशक्ता आज स्मार्ट सिटीची आहे. त्यापेक्षा जास्त आवशक्ता हि स्मार्ट व्हिलेज या संकल्पनेची आहे.

८. सारांश :-

उपरोक्त योजनेच्या अभ्यासावरुन असे स्पष्ट होते की, ही योजना जर विस्तृतपणे राबविण्यात आली आणि देशाच्या अर्थव्यवस्थेचा अभ्यास केला तर, अशा योजनामधून फार मोठया प्रमाणात विकास घडून येवू शकतो. त्यामुळे या योजनेकडे लक्ष देणे गरजेचे आहे. आज देशातील शहरी भागाचा विचार केला असता, मानवाला जगण्यासाठी आवश्यक असणाज्या अन्न, वस्त्र, निवारा यामधील अन्न आणि वस्त्र निर्मीतीसाठी शहरी भागांना ग्रामीण भागावरच अवलंबून राहावे लागते. म्हणुन या देशामध्ये सर्वप्रथम ग्रामीण भागाचा विकास अशा योजनांमधून साधणे काळाची गरज आहे.

संदर्भग्रंथ सुची :-

१. महाराष्ट्र ग्रामीण रस्ते विकास संस्था, विद्यापीठ रोड अमरावती.

२. ग्रामीण विकास मंत्रालय योजना पत्रिका, यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठाण पुणे.

३. जाधव, जे.के(२०१३), ग्रामविकास व पंचायती राज, लोकपाल पब्लीकेशन, औरंगाबाद.

४. सामाजिक व आर्थीक समालोचन अमरावती जिल्हा.

५. ग्रामीण विकास यंत्रणा कार्यालय, अमरावती.

❑❑❑

24

कबीर मानवता के पक्षधर

प्रा. डॉ. न.पु. काळे

कला एवं विज्ञान महाविद्यालय, चौसाळा, ता.जि. बीड

हिंदी साहित्य में कबीर का स्थान महत्त्वपूर्ण रहा है | एक महापुरुष के रुप, महात्मा के रुप में कबीर को सर्वत्र पहचाना जाता है | उनके दोहों में लोकमंगल की भावना दृष्टिगोचर होती है| एक क्रांतिकारी, विद्रोही, फक्कड व्यक्ति के रुप में कबीर का परिचय मिलता है |

उनके जन्म के बारे में कई किंवदंतियाँ भी रही है | जाति, धर्म के बारे में भी कई मान्यता है | उनके ही दोहों के माध्यम से यह स्पष्ट होता है की, वे जुलाहा जाति से थे | "तू बाम्हन मैं कासी का जुलाहा|"

हमारे देश में, व्यवस्था में जाति, धर्म की तलाश पता नहीं क्यों की जाती है ? अभी भी हम किसी की श्रेष्ठता, उँच-नीचता को दिखाने के लिए वर्ण, जाति-धर्म व्यवस्था को स्वीकार करते है, यह हमारी संकीर्ण मानसिकता कब बदलेगी क्या पता ? बल्कि कबीर ने इस जाति-वर्ण, धर्म व्यवस्था जो विषमता को बढ़ावा देनेवाली है इसका विरोध किया था एवं समानता के पथ को अपनाया था, वह मार्ग समाज को दिखाया था |

"जाति न पूछो साधो की, पूछ ली जिये ज्ञान |
मोल करो तलवार का, पड़ा रहने दो म्यान |"

कबीर धर्म व्यवस्था में व्याप्त वर्ण, जाति, धर्म भेद के विरोधी थे | साथ ही कबीर ने हिंदू-मुस्लिम धर्म के भीतर चलने वाली प्रथा, परम्पराओं, अंधश्रद्धा का भी विरोध किया है | जैसे-

"पीपर-पाथर पूजन लागे तीरथबर्त भूलाना |
माला पहिरे टोपी पहिरे छाप-तिलक अनुमाना |"

सच बोलने का साहस कबीर ने किया है | धर्म के नाम पर चलनेवाली बुरी परंपरा मान्यता का विरोध करके 'मानवता धर्म' की बात कबीर करते है |

जप-जाप, टोपी पहन, माला फेरनेवालों को तिलक लगाने वालों को कबीर ने फटकारा है | धर्म, जाति के नाम पर चलने वाला ढोंग कबीर को पसंद नहीं है | कबीर सही मायने में धर्म-निरपेक्षता को अपनाते दिखाई देते है | वह हिंदू-मुस्लिम, जैन, योगी, नाथ संप्रदाय

आदिओं के बीच चलनेवाली बुरी पद्धतियों का विरोध करते हैं | कबीर ना ही हिंदू का और ना ही मुस्लिम धर्म का पक्ष लेते है बल्कि वह सबको मनुष्य के रुप में स्वीकार कर मानवता के धर्म का रास्ता दिखाते हुए नजर आते है | उनकी मान्यता है की, ईश्वर-राम, रहिम को प्राप्त करने के लिए सच्चाई का एक ही मार्ग की आवश्यकता है | बाह्यांडबर, ढोंग जरुरी नहीं है | हरि को भजे सौ हरि का होई | यह सरल मान्यता कबीर की रही है |

"कबीर युग प्रवर्तक संत थे | उनकी कथनी और करनी मे साम्य था | उनमें अपने सिद्धांतो और विश्वास के प्रति पूरी ईमानदारी थी | इसी कारण उनकी उक्तियाँ अत्यंत तीखी हैं | मानव मात्र को समान समझ कबीर समाज में उँच-नीच, छुआछूत और बाह्याचार के झूठे दिखावे को सहन नहीं कर सकते थे |"१

लोककल्याण की भावना के कारण कबीर ने अपने विचारों को जनभाषा में व्यक्त किया है | तत्कालीन परिस्थिति में धार्मिक विचारों को व्यक्त करने का संस्कृत भाषा माध्यम थी लेकिन संस्कृत तो जन-सामान्यो के समझ से परे थी | कबीर स्वयं पढ़े-लिखे नहीं थे, लेकिन समकालीन सामाजिक, धार्मिक व्यवस्था की सही समझ उन्हें थी | उन्होंने जन-भाषा में ही अपने विचारों को, उपदेशों को व्यक्त करके भाषा के ठेकेदारों को चेतावनी देने का कार्य तो किया ही है साथ ही साथ सामान्य जनता को उपदेश, विचारों से परिचित करते हुए उन्हें भी अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का, समझने-समझाने का द्वार खोल दिया है |

'संस्कृत है कूप जल, भाषा बहता नीर' कह कर कबीर ने सामान्य जनता को वाणी प्रदान करने का महत्त्वपूर्ण कार्य किया है |

कबीर को क्रांतिकारी, सुधारक के रुप में जाना जाता है | उन्होंने समानता, दया-करुणा, प्रेम, सत्य, सदाचार, अहिंसा, ज्ञान आदि मानवीय भावनाओं को अपनाया है | समाज में जो अज्ञान है, शोषण है, धार्मिक बाह्यांडंबर, दु:खी पीड़ित अज्ञानी जनता से स्वयं कबीर दु:खी है | वे सब मानव जाति का उत्कर्ष चाहते है लेकिन सबको समानता, उत्कर्ष के अवसर प्राप्त नहीं है | संत ज्ञानेश्वर के भाँति कबीर समाज के हित के लिए व्याकुल है | वह समस्त मानव को सत्य का मार्ग बताना चाहते है | जनता के शोषण, पीड़ा से कवि व्यथित होते है-

"सुखिया सब संसार है, खाबे अरु सोवे |
दुखिया दास कबीर है, जागे अरु रोवें |"२

कबीर मानवतावाद के पक्षधर रहे है | संत तुकाराम के जैसी उनकी आस्था समाज के दलित-पीड़ित, शोषित जनता पर रही है | 'बुडते है जन न देखे डोळा' जैसी अवस्था कबीर की हुई है |

प्रेम की भावना को कबीर महत्त्वपूर्ण मानते है | केवल पोथी पढ़ने से ज्ञान की प्राप्ती नहीं होती | सब रट-रट कर पढ़ लिया लेकिन ज्ञान की समझ ही नहीं आ पाई तो केवल पढ़ने से क्या-फायदा? कवि प्रेम और अनुभूति को आवश्यक मानते है | प्रेम से क्या तात्पर्य है? जो एक-दूसरे के मन की बात समझे, उससे मनुष्यता, आत्मियता से बर्ताव करें | यह मानवतावादी भूमिका रखकर कवि ने पोथी रटने वालों को , स्वयं को बहुत बड़ा ज्ञानी समझने वाले पाखंडी का पर्दाफाश करते हुए कहाँ है-

"पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय |
ढाई आखर प्रेम का, पढै सो पंडित होय |"

कबीर के विचारों में समता, मानवता विकास का प्राबल्य रहा है | सबको मानवता के रुप में एक समान रुप में स्वीकार करनेवाली व्यवस्था कवि चाहते है | उँच-नीचता कर्म के आधार पर विचारों के आधार पर हो सकती है वह जाति, धर्म से नहीं | समाज के इस मान्यता को फटकारते हुए कबीर कहते हैं-

"जो तूं बांभन बंभनी जाया, तौ आन बाट क्यों नहीं आया |
जो तू तुरक तुरकनी जाया, तौ भीतर खतना क्यों न कराया |"३

मानवतावादी दृष्टि को अपना कर कवि सामाजिक समता की कामना करते हुए व्यवस्था का लोहा लेते है | समाज हित की भावना के खातीर ही यह विद्रोही कवि सही मायने में धर्मनिरपेक्षता को अपनाते हैं | आज देश में पढ़े-लिखे, ज्ञानी लोगों की संख्या काफी मात्रा में बढ़ी हुई है लेकिन फिर भी जाति, संप्रदाय, धर्म के नाम पर बहुत बड़ी दरार समाज एवं मनुष्य के मन में दिखाई देती है | शिक्षित होकर जो मनुष्यता की राह कबीर ने दिखाई थी उसपर चलना चाहिए था लेकिन हम जाति, धर्म के नाम पर आज भी एक दुसरे के खुन के प्यासे है | हम सब ने असहिष्णुता को बढ़ावा दिखा है, कबीर तो यह नहीं चाहते थे |

कबीर आम-आदमी को सदाचार, आचरण की शुद्धता का मार्ग बताकर आत्म-गौरव बढ़ाते है | सामान्य जन में आत्मविश्वास निर्माण करने का तथा वह बढाने का महत्त्वपूर्ण कार्य कबीर ने किया है | कबीर के राम दशरथ पुत्र नहीं है | वह तो सर्व व्यापी है | वह असीम एवं निर्गुण है | वह जन्म रहित, माया रहित है, वह नष्ट होनेवाले नहीं है | उसका ना तो कोई रंग-रुप है वह सर्वत्र व्याप्त है |

सामान्य जनता को भक्ति का, मुक्ति का इससे आसान मार्ग क्या हो सकता है ? कबीर इस 'राम' के अपने आराध्य का अस्तित्त्व स्वीकार कर सबको वह मार्ग बताते है जिससे व्रत माला फेरना, तिलग लगाना, योग की विभिन्न पद्धतियाँ करना जरुरी नहीं है | कबीर के राम महात्मा फुले के निर्मिक के समान है | जिसे सत्य, प्रेम सदाचार के मार्ग द्वारा प्राप्त किया जाता है | कबीर मानव धर्म के

प्रवर्तक रहे हैं | "कबीर ने सभी धर्मों को समान माना है | उनके विचार के कारण भारतीय समाज में समन्वयवादी विचार धारा तैयार होने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है | सभी की समानता की घोषणा करके कबीर काव्य ने भारतीय साम्यवाद की पुनःप्रतिष्ठा की है |"४

निष्कर्षतः

कबीर के दोहों में मानवतावादी स्वर सुनाई देता है | उन्होंने अपने विचारों, उपदेशो के माध्यम से बहुजन हित की बात कही है | उनके काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण सर्वत्र दिखाई देता हैं | इसी कारण उन्हें क्रांतिकारी, विद्रोही एवं महात्मा के रुप में स्वीकार किया जाता है | उन्होंने क्रांति का पथ सामान्य जनता के हक के लिए अपनाया, व्यवस्था से लोहा लिया क्योंकि आम-आदमी का उत्कर्ष हो |

सत्य का रास्ता, आसान उपासना का मार्ग बताकर जन सामान्यों को मुक्ति का रास्ता कबीर ने बताया | सबके लिए उनके मन में प्रेम-भावना थी-

"कबिरा खड़ा बाजार में, सबकी मांगे खैर |
ना काऊ से दोस्ती, ना काऊ से बैर |"

संदर्भ सूचि-

१. समीक्षा से समीक्षा तक - डॉ. हणमंत पाटील - १७४
२. कबीर ग्रंथावली - डॉ. पुष्पपाल सिंह -५७
३. वहीं- ५७
४. समीक्षा से समीक्षा तक - डॉ. हणमंत पाटील- १७६

❑❑❑

25

भारतीय वर्ण व्यवस्था आणी उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीत

सहा. प्रा. महेश शामराव दाडगे
नवगण महाविद्यालय, परळी वेजनाथ.

भारतीय शास्त्रीय संगीताला एक परंपरा आहे. या परंपरेला जपण्याचा पुरेपुर प्रयत्न हा अनेक काळापासून होत आलेला आहे. विशिष्ट एका वर्गानेच साहित्य, कला आणी संस्कृती ही जपलेली आहे असे सांगण्यातही येते पुस्तकांतून पाहण्यातही येते. असे दिसून येत असले तरी इतर वर्णातील लोकांनी त्यांचे साहित्य,कला आणी संसकृतीची जपणुक ही मौखीक स्वरूपात जपल्याचे प्रमाण आपणास अलीकडच्या भारतीय इतिहासात पुस्तकातून दिसून येतात. भारतीय शास्त्रीय संगीतासाठी निम्न वर्णव्यवस्थेतील लोकांनी संघर्ष केलेला आपणास इतिहासात कुठेही सापडत नाही.

भारतीय शास्त्रीय संगीताच्या इतिहासात संगीताचे मुळ दोन भेद सांगीतले गेले आहेत.

१. गंधर्व - गान
२.मार्गी संगीत - देशी संगीत.

यातील गंधर्व संगीत आणी मार्गी संगीत हे एकाच स्वरूपाचे आहेत. गंधर्व संगीत आणी मार्गी संगीत हे इश्वराशी संबंधीत असल्याने त्याची मत्तेदारी ही ब्राह्मण वर्णाचीच असल्याचे आपणास दिसून आले आहे. गान आणी देशी संगीत हे इतर वर्ण व्यवस्थेतील दुसऱ्या,तिसऱ्या व चौथ्या वर्णातील लोकांसाठीचे संगीत होते. गंधर्व किंवा मार्गी संगीताचे स्वरूप हळुहळु मुस्लीम संगीताच्या संयोगाने शास्त्रीय संगीतात इ ाले. तर गान आणी देशी संगीताचे स्वरूप हे सुगम संगीतात (गजल, भावगीतापासून लोकगीत व चित्रपट गीतांपर्यंत सर्व गीत प्रकार)होत गेले.

महाराष्ट्रात शास्त्रीय संगीतोपासक तानसेन तसेच कानसेन (अनुक्रमे संगीतकारांचा वर्ग आणी श्रोता वर्ग) मोठ्या प्रमाणावर आहेत. महाराष्ट्रातील उत्तर भारतीय शास्त्रीय संगीतात वर्ण व्यवस्थेची काय परीस्थीती होती आणी आहे याचा विचार मी माझ्या अभ्यासानुसार या लेखात करणार असून या लेखाबद्दल वाचकांना काहिं विचार सुचल्यास किंवा आक्षेपही असल्यास माझ्या ज्ञानात त्यांनी भर घालावी